फ़ज़ाइले दुआ किताब से लिये गए मवाद की चौथी क़िस्त

Isme Aa'zam Kise Kahte Hain (Hindi)

कुल सफ़हात 29

# इस्मे आ'ज़म किसे कहते हैं

अमीरे अहले सुन्नत ﷺ के मुबारक हाथों से लिखा गया इस्मे आ'ज़म


मुसन्निफ़ : रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رحمة الله عليه

शारेह : आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمة الله عليه



पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या ( दा'वते इस्लामी )

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

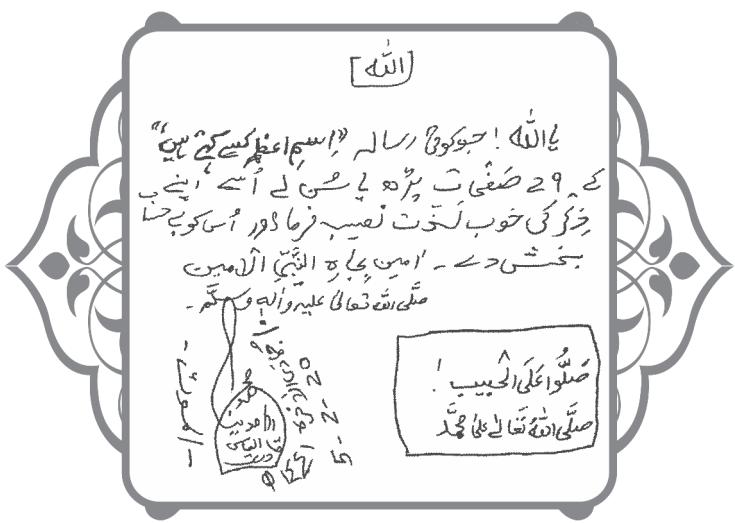




www.dawateislami.net

# फ़स्ले पन्जुम इस्मे आ'ज़म व कलिमाते इजाबत में

**قال الرضاء :** यहां बीस बिशारतें हैं, नव[9] ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ज़िक्र फ़रमाई और ग्यारह फ़क़ीर सगे कूए क़ादिरी غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ ने बढ़ाई ।﴾

**बिशारत (1) :** ह़दीस में आयए करीमा : ﴿لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴾ [1] की निस्बत फ़रमाया : "येह इस्मे आ'ज़म है जो इस के साथ दुआ़ करे क़बूल हो ।"[2]

उ़-लमा फ़रमाते हैं : आयए करीमा क़बूले दुआ़ ख़ुसूसन दफ़्ए बला में असरे तमाम रखती है ।

**قال الرضاء :** सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला का वोह इस्मे आ'ज़म न बता दूं कि जब वोह उस से पुकारा जाए, इजाबत करे (या'नी क़बूल फ़रमाए) और जब उस से सुवाल किया जाए अ़त़ा फ़रमाए ? वोह वोह दुआ़ है जो यूनुस عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तीन तारीकियों में की थी : ﴿لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴾ किसी ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ! येह ख़ास यूनुस عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये था या सब मुसल्मानों के लिये है ? फ़रमाया : मगर तू ने ख़ुदा तआ़ला का

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बे जा हुवा ।" (پ١٧، الأنبيآء : ٨٧)

2 "المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء ... إلخ، الحديث: ١٩٠٨، ج٢، ص١٨٤ و"الحصن الحصين"، ص٣٣.



www.dawateislami.net

इर्शाद न सुना कि ﴿فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ﴾

या'नी : "पस हम ने यूनुस की दुआ क़बूल फ़रमाई और उसे ग़म से नजात दी और यूंही नजात देंगे ईमान वालों को।" (پ١٧، الأنبياء: ٨٨)

رواه أحمد والترمذي والنسائي والحاكم مطوّلاً واللفظ له والبيهقي والضياء في "المختارة". ﴾[1]

**बिशारत (2) :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक शख़्स को कहते सुना :

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ.[2]

इर्शाद फ़रमाया : "क़सम ख़ुदा की तूने अल्लाह तआ़ला से वोह इस्मे आ'ज़म ले कर सुवाल किया कि जब इस से सुवाल किया जाता है, अल्लाह तआ़ला अ़ता करता है और जब इस से दुआ़ की जाती है, क़बूल फ़रमाता है।"

قال الرضاء: رواه أحمد وابن أبي شيبة وأبو داود والترمذي

---

1 इस ह़दीस को अह़मद, तिरमिज़ी, नसाई, बैहक़ी और ह़ाकिम ने तफ़्सील से बयान किया है, और अल्फ़ाज़े ह़दीस ह़ाकिम की रिवायत के हैं, और ज़िया मक़्दिसी ने "मुख़्तारा" में इस ह़दीस को रिवायत किया है।

"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء... إلخ، الحديث: ١٩٠٨، ج٢، ص١٨٤، بتصرّف

2 ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से इस गवाही के तुफ़ैल सुवाल करता हूं कि बेशक तू ही मा'बूद है तेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, तू अकेला व बे नियाज़ है कि न तेरी कोई औलाद है और न तू किसी से पैदा हुवा, और तेरे जोड़ का कोई नहीं।



www.dawateislami.net

والنسائي وابن ماجه وابن حبان والحاكم.[1]

इमाम अबुल ह़सन अ़ली मक़्दिसी व इमाम अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी व इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी वग़ैरहुम अइम्मा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस की अस्नाद में कोई त़ा'न नहीं और दरबारए इस्मे आ'ज़म येह सब अह़ादीस से जय्यद व सह़ीह़ तर है।"[2]

**बिशारत (3) :** एक ह़दीस में आया, इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है :

﴿اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ﴾[3]

और ﴿الٓمّٓ ۝ اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ﴾۔[4]

**قال الرضاء: رواه ابن أبي شيبة وأبو داود والترمذي وابن ماجه**

---

1 इस ह़दीसे मुबा-रका को इमाम अह़मद, इब्ने अबी शैबा, अबू दावूद, तिरमिज़ी, नसाई, इब्ने माजह, इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम ने रिवायत किया।

"المسند" للإمام أحمد، ج٩، ص١٠، الحديث: ٢٣٠١٣.

و"سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب الدعاء، الحديث: ٩٤-١٤٩٣، ج٢، ص١١٣.

2 "الترغيب والترهيب"، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب في كلمات يستفتح بها الدعاء...إلخ، تحت الحديث:١، ج٢، ص٣١٧.

و"فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٨-١٨٩.

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला मेह़रबान।" (پ٢، البقرة: ١٦٣)

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला।" (پ٣، ال عمران: ١-٢)



www.dawateislami.net

عن أسماء بنت يزيد رضي الله تعالٰى عنها. ﴾[1]

**बिशारत (4) :** बा'ज़ उ-लमा "يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ"[2] को इस्मे आ'ज़म कहते हैं।

**قال الرضاء :** सरी बिन यह्या قُدِّسَ سِرُّهٗ बा'ज़ औलिया से रावी : मैं दुआ करता था अल्लाह तआला से कि मुझे इस्मे आ'ज़म दिखा दे, मुझे आस्मान में एक सितारा नज़र पड़ा जिस पर लिखा था :

"يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ" ﴾

**बिशारत (5) :** बा'ज़ उ-लमा ने "يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ" को इस्मे आ'ज़म कहा।

**बिशारत (6) :** हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ैद बिन सामित رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ को यूं दुआ करते सुना :

---

1 इस ह़दीसे मुबा-रका को इब्ने अबी शैबा, अबू दावूद, तिरमिज़ी और इब्ने माजह ने ह़ज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत किया है।

"سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء في جامع الدعوات... إلخ الحديث: ٣٤٨٩، ج٥، ص٢٩١.

و"سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب الدعاء، الحديث: ١٤٩٦، ج٢، ص١١٤.

2 या'नी "ऐ ज़मीन व आस्मानों को बे किसी नुमूना के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ अ-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले !"

3 "الترغيب والترهيب"، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب في كلمات يستفتح...إلخ، الحديث: ٥، ج٢، ص٣١٨.

و"مسند أبي يعلى"، حديث أبي بصرة الغفاري، الحديث: ٧١٧١، ج٦، ص١٨٨.

و"فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٨.



www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ.[1]

फ़रमाया : "येह अल्लाह का वोह इस्मे आ'ज़म है कि जब इस से पुकारा जाए, इजाबत करे और जब मांगा जाए अ़ता फ़रमाए।"

أخرجه أحمد وابن أبي شيبة والأربعة وابن حبان والحاكم عن أنس رضي الله تعالى عنه.[2]

**बिशारत (7) :** ह़दीस में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने यूं दुआ़ की :

---

1 ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से इस बात के वसीले से सुवाल करता हूं कि सब ख़ूबियां तुझी को हैं कोई मा'बूद नहीं मगर तू अकेला, तेरा कोई शरीक नहीं, ऐ मेह्रबान ! ऐ बहुत एह़सान फ़रमाने वाले ! ऐ आस्मानों और ज़मीन को बे किसी नुमूना के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! ऐ आप ज़िन्दा ! ऐ औरों को क़ाइम रखने वाले।

2 अह़मद, इब्ने अबी शैबा और अस्ह़ाबे सु-नने अर-बआ़ या'नी तिरमिज़ी, अबू दावूद, नसाई, इब्ने माजह व इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस ह़दीस की तख़्रीज की।

"المسند" للإمام أحمد، الحديث: ١٣٨٠٠، ج٤، ص٥٢٨.

و"سنن ابن ماجه"، كتاب الدعاء، باب اسم الله الأعظم، الحديث: ٣٨٥٨، ج٤، ص٢٧٦.

و"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٩٩، ج٢، ص١٨١.



www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَدْعُوْكَ اللّٰهَ وَأَدْعُوْكَ الرَّحْمٰنَ وَأَدْعُوْكَ الْبَرَّ الرَّحِيْمَ وَأَدْعُوْكَ بِأَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ أَنْ تَغْفِرَ لِيْ وَتَرْحَمَنِيْ.[1]

नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इन में इस्मे आ'ज़म है।"

رواه ابن ماجه.[2]

**बिशारत (8) :** अबू दरदा व इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "इस्मे आ'ज़म "رَبِّ رَبِّ" है।"

رواه الحاكم.[3]

ह़दीस में आया नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा "يَا رَبِّ يَا رَبِّ" कहता है, रब عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है : **लब्बैक**, "ऐ मेरे बन्दे ! मांग कि तुझे दिया जाए।"

---

1 या'नी : "ऐ अल्लाह ! मैं तुझे अल्लाह, रह़मान, और बर्र रह़ीम कह कर पुकारती हूं, और ऐ अल्लाह ! मैं तेरे तमाम अस्माए हुस्ना के वसीले से, जो मैं जानती हूं और जो नहीं जानती, तेरी बारगाह में दुआ़ करती हूं कि मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रह़्म फ़रमा।"

2 इस ह़दीस को इब्ने माजह ने रिवायत किया।

"سنن ابن ماجه"، كتاب الدعاء، باب اسم اللّٰه الأعظم، الحديث: ٣٨٥٩، ج٤، ص٢٧٨.

3 इस ह़दीस को ह़ाकिम ने रिवायत किया।

"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٩٠٣، ج٢، ص١٨٢



www.dawateislami.net

رواه ابن أبي الدنيا عن عائشة رضي الله تعالٰى عنها.[1]

**बिशारत (9) :** हज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़्वाब में देखा कि इस्मे आ'ज़म "اَللّٰہُ اَللّٰہُ اَللّٰہُ الَّذِیْ لَا اِلٰـہَ اِلَّا ھُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ" है।[2]

**बिशारत (10) :**[3] अबू उमामा बाहली सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शागिर्द क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रह़मान शामी कहते हैं : इस्मे आ'ज़म "اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ" (आप ज़िन्दा औरों को क़ाइम रखने वाला) है।[4]

**बिशारत (11) :** इमाम क़ाज़ी इ़याज़ ने बा'ज़ उ़-लमा से नक़्ल फ़रमाया : "इस्मे आ'ज़म कलिमए तौह़ीद है।"[5]

**बिशारत (12) :** इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी व बा'ज़ सूफ़ियाए किराम ने कलिमा "ھُوَ" को इस्मे आ'ज़म बताया।[6]

**बिशारत (13) :** जुम्हूर उ़-लमा फ़रमाते हैं कि **"अल्लाह"**

---

1 इस ह़दीस को इब्ने अबिदुन्या ने उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत किया।

"الترغيب والترهيب"، كتاب الذكر والدعاء الحديث: ١١، ج٢، ص٣٢٠، (بحوالہ ابن ابی الدنیا).

و"فتح الباري"، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٩، (بحوالہ ابن ابی الدنیا).

2 अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।

"فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٩

3 बिशारत 10 ता 20 शारेह़ या'नी मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की ज़िक्र फ़रमूदा हैं।

4 "الحصن الحصين" في بيان اسم الله تعالى الأعظم، ص٣٣.

5 "فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٩

6 "الحاوي للفتاوي"، الدر المنظم في الاسم الأعظم، ج١، ص٤٧٣.

و "التفسير الكبير" للرازي، ج١، ص١٣٩-١٤٠، وج٢، ص١٥٠-١٥٢.



www.dawateislami.net

इस्मे आ'ज़म है। [1] كذا عزاه إليهم القارئ.

हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : शर्त़ येह है कि तू अल्लाह कहे और उस वक़्त तेरे दिल में अल्लाह तआ़ला के सिवा कुछ न हो।[2]

**बिशारत (14) :** बा'ज़ उ़-लमा ने **"बिस्मिल्लाह"** शरीफ़ को इस्मे आ'ज़म कहा।

हुज़ूर ग़ौसुस्स-क़लैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल कि **"बिस्मिल्लाह"** ज़ुबाने आ़रिफ़ से ऐसी है जैसे "كُنْ" कलामे ख़ालिक़ से।[3]

**बिशारत (15) :** रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो इन पांच कलिमों से निदा करे अल्लाह तआ़ला से जो कुछ मांगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा फ़रमाए :

((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)).[4]

---

1 जैसा कि मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने इसे जुम्हूर उ़-लमा की त़रफ़ मन्सूब किया। "مرقاة المفاتيح" شرح مقدمة الكتاب، ج١، ص٤١.

2 "بهجة الأسرار"، ذكر فصول من كلامه مرصعاً... إلخ، ص١٣٥

3 المرجع السابق.

4 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, सारी बादशाहत उसी के लिये है और सब ख़ूबियां उसी को, और वोह तो सब कुछ कर सकता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ के बिग़ैर बुराई से बचने की कुछ त़ाक़त नहीं और न ही नेकी करने की कुछ क़ुव्वत। =



www.dawateislami.net

**बिशारत (16) :** ऊपर गुज़रा कि जो शख़्स "يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ" तीन बार कहे फ़िरिश्ता कहता है : मांग कि "**अर-ह़मुर्राह़िमीन**" ने तेरी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई ।[1]

**बिशारत (17) :** पांच बार "يَا رَبَّنَا" कहने का फ़ज़्ल इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से गुज़रा ।[2]

**बिशारत (18) :** येही ख़ासिय्यत अस्माए ह़ुस्ना की है ।

**बिशारत (19) :** नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक शख़्स को "يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ" (ऐ अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले !) कहते सुना, फ़रमाया : मांग कि तेरी दुआ़ क़बूल हुई ।[3]

**बिशारत (20) :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ह़दीस में है : ह़ुज़ूर **सय्यिदुल मुर-सलीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

जिब्राईल मेरे पास कुछ दुआ़एं लाए और अ़र्ज़ की : जब ह़ुज़ूर को कोई ह़ाजत पेश आए इन्हें पढ़ कर दुआ़ मांगिये :

---

= "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٨٤٩، ج١٩، ص٣٦١.

و"المعجم الأوسط" للطبراني، من اسمه مطلب، الحديث: ٨٦٣٤، ج٦، ص٢٣٨.

و"مجمع الزوائد"، كتاب الأدعية، باب فيما يستفتح به الدعاء ... إلخ، الحديث: ١٧٢٦٤، ج١٠، ص٢٤١.

1 "المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، باب إن لله ملكاً... إلخ، الحديث: ٢٠٤٠، ج٢، ص٢٣٩.

2 जैसा कि फ़स्ले दुवुम में अदब नम्बर 21 के तह़्त गुज़रा ।

3 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ماجاء في عقد التسبيح باليد، الحديث: ٣٥٣٨، ج٥، ص٣١٢.



www.dawateislami.net

((يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ يَاغِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا كَاشِفَ السُّوْءِ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ يَا إِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ بِكَ أُنْزِلَ حَاجَتِيْ وَأَنْتَ أَعْلَمُ بِهَا فَاقْضِهَا)).[1]

---

1 ऐ आस्मानों और ज़मीन को बे किसी नुमूना के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! ऐ फ़रियाद रसों की फ़रियाद रसी फ़रमाने वाले ! ऐ मदद चाहने वालों की मदद फ़रमाने वाले ! ऐ सब आफ़तों को दूर फ़रमाने वाले ! ऐ सब से ज़ियादा मेह्रबान ! ऐ परेशान ह़ालों की दुआ़ क़बूल फ़रमाने वाले ! ऐ सब जहां वालों के मा'बूदे बरह़क़ ! तेरी ही त़रफ़ से मेरी ह़ाजत आई और तू ही उस को ज़ियादा जानता है तो तू उस ह़ाजत को रवा फ़रमा ।

"المعجم الأوسط" الحديث: ١٤٥، ج١، ص٥٥.

و"مجمع الزوائد"، كتاب الأدعية، باب الأدعية المأثورة عن رسول الله... إلخ، الحديث: ١٧٣٩٦، ج١٠، ص٢٨٤، بألفاظ متقاربة.

لم نعثر على هذا الحديث عن ابن عباس ولكن وجدناه عن حذيفة بن اليمان رضي الله تعالى عنهما.



www.dawateislami.net

# फ़स्ले शशुम मवानेए इजाबत में

**قال الرضاء :** वोह पन्दरह[15] हैं । पांच[5] इफ़ादए ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ और दस[10] ज़ियादते फ़क़ीरे ह़क़ीर غُفِرَ لَہٗ ।

**ऐ अ़ज़ीज़ !** अगर दुआ़ क़बूल न हो, तो उसे अपना क़ुसूर समझे, ख़ुदाए तआ़ला की शिकायत न करे कि उस की अ़त़ा में नुक़्सान नहीं, तेरी दुआ़ में नुक़्सान है ।(1)

*उस के अल्त़ाफ़ तो हैं आ़म शहीदी सब पर*

*तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता*

ہرچہ ہست از قامت ناساز و بے اندام ماست

ورنہ تشریف تو بر بالائے کس کوتاہ نیست (2)

ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ़ चन्द सबब से रद होती है :

**पहला सबब :** किसी शर्त़ या अदब का फ़ौत होना और येह तेरा क़ुसूर है, अपनी ख़त़ा पर नादिम न होना और ख़ुदा की शिकायत करना, निरी बे ह़याई है ।

**قال الرضاء :** नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "एक शख़्स सफ़रे दराज़ (त़वील सफ़र) करे, बाल उलझे, कपड़े गर्द में अटे (मैले कुचैले), अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ फैलाए और **या रब ! या रब !** कहे और उस का खाना ह़राम से और पीना ह़राम से और पहनना ह़राम से

---

1 या'नी उस मौला करीम عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा में कोई कमी नहीं, कमी तो तेरे दुआ़ करने में है

2 *किसी पर कम नहीं फ़ज़्लो करम तेरा मेरे मौला*

*येह बद आ'मालियों का है नतीजा कि परेशां हूं*



www.dawateislami.net

और परवरिश पाई ह़राम से, तो उस की दुआ़ कहां क़बूल हो !''[1]

सफ़र और इस परेशां ह़ाली का ज़िक्र इस लिये फ़रमाया कि येह ज़ियादा जालिबे रह़मत व मूरिसे इजाबत होते हैं (या'नी रह़मत को ज़ियादा खींच लाने वाले और दुआ़ की क़बूलिय्यत का बाइ़स होते हैं), ब ईं हमा (इस के बा वुजूद) जब अक्ल व शुर्ब (खाना पीना) ह़राम से है, उम्मीदे इजाबत नहीं ।

**दूसरा सबब :** गुनाहों से तलव्वुस (गुनाहों में मुब्तला रहना) ।

**قال الرضاء :** अगर्चे येह भी सबबे अव्वल में दाख़िल था मगर ब वज्हे मुह़तम बिश्शान होने के (या'नी ज़ियादा अहम्मिय्यत का ह़ामिल होने की वजह से) जुदा ज़िक्र फ़रमाया ।

इसी वासित़े दुआ़ से पहले मज़्लूमों के ह़ुक़ूक़ वापस करना और उन से अपने क़ुसूर बख़्शवाना और ख़ुदा के सामने तौबा व इस्तिग़फ़ार और तर्के मआ़सी (गुनाहों के छोड़ने) पर अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) करना लाज़िम है ।

का'ब अह़बार से मन्क़ूल : ज़मानए ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में क़ह़त़ पड़ा, आप बनी इस्राईल को ले कर तीन बार दुआ़ के वासित़े गए मींह न बरसा (या'नी बारिश न हुई), अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य भेजी : ''ऐ मूसा ! मैं तेरी और तेरे साथ वालों की दुआ़ क़बूल न करूंगा कि तुम में एक नम्माम (चुग़ुल ख़ोर) है कि एक का ऐ़ब दूसरे से बयान करता है ।'' अ़र्ज़ की : ऐ रब ! वोह कौन है कि उस को हम अपने गुरौह से निकाल दें ? हुक्म आया : ''मैं तुम्हें नमीमी (चुग़ुल ख़ोरी) से

---

[1] "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقة من الكسب الطيب وترتيبها، الحديث: ٢٣٠١، ص٥٠٧.

و"سنن الترمذي، كتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة البقرة، الحديث: ٣٠٠٠، ج٤، ص٤٦٤-٤٦٥.



www.dawateislami.net

मन्अ़ करता हूं और ख़ुद ऐसा करूं ?" मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सब को तौबा का हुक्म किया बा'दे तौबा दुआ़ मांगते ही मींह बरसा ।[1]

सुफ़्यान सौरी رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى कहते हैं : बनी इस्राईल सात[7] बरस क़ह़्त़ में मुब्तला रहे यहां तक कि मुर्दों और बच्चों को खाने लगे हमेशा पहाड़ों में निकल जाते और आ़जिज़ी व तज़र्रोअ़ के साथ दुआ़ मांगते और रोते मगर रह़मते इलाही उन के ह़ाल पर अस्लन तवज्जोह न फ़रमाती यहां तक कि उन के पैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य हुई : "अगर तुम मेरी त़रफ़ इस क़दर चलो कि तुम्हारे घुटने घिस जाएं और तुम्हारे हाथ आस्मान को लग जाएं और तुम्हारी ज़बानें दुआ़ करते करते गूंगी हो जाएं जब भी मैं तुम में से किसी दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल न करूं और किसी रोने वाले पर रह़्म न फ़रमाऊं, जब तक मज़्लूमों को उन के हुक़ूक़ वापस न कर दें ।" पस बनी इस्राईल ने मज़्लूमों को उन के ह़क़ वापस किये, उसी दिन मींह बरसा ।[2]

मालिक बिन दीनार رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى कहते हैं : बनी इस्राईल अय्यामे क़ह़्त़ में मींह की दुआ़ के लिये निकले, पैग़म्बरे वक़्त عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य हुई : "इन से कह दे कि तुम मेरी त़रफ़ निकलते हो नापाक बदनों के साथ, और हथेलियां मेरी त़रफ़ उठाते हो जिन से तुम ने ख़ूने नाह़क़ किये, और तुम ने अपने पेट ह़राम माल से भरे हैं अब तुम पर मेरा ग़ज़ब सख़्त हो गया और तुम को सिवा ज़ियादा मुझ से दूर होने के दुआ़ से कुछ फ़ाएदा न मिलेगा ।"[3]

---

1 "إحياء العلوم"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٧

2 المرجع السابق.

3 المرجع السابق.

या'नी अपने गुनाहों और ना फ़रमानियों में ह़द से बढ़ने के सबब तुम्हारा ह़ाल येह हो गया है कि अब तुम्हारी दुआ़एं तुम्हें मेरे क़रीब करने के बजाए तुम्हें मुझ से मज़ीद दूर कर देंगी ।



www.dawateislami.net

और अबू सिद्दीक़ नाजी से रिवायत है ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मींह की दुआ़ के वासित़े बाहर निकले एक च्यूंटी को देखा अपने पाउं आस्मान की त़रफ़ उठाए कहती है : "इलाही ! मैं भी तेरी ख़ल्क़ से एक मख़्लूक़ हूं और हम को तेरे रिज़्क़ से बे परवाही नहीं हो सकती, पस तू हम को औरों के गुनाहों के सबब हलाक न कर।" सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह देख कर फ़रमाया : लौट चलो कि इस च्यूंटी की दुआ़ से मींह बरसेगा ।[1]

औज़ाई़ कहते हैं : लोग मींह की दुआ़ के लिये निकले बिलाल बिन सा'द ने ख़ुदा की ता'रीफ़ व सना कर के कहा : ऐ ह़ाज़िरीन ! क्या तुम अपने गुनाह पर इक़्रार नहीं करते हो ? सब ने कहा : हम इक़्रार करते हैं। फिर कहा : इलाही ! तू फ़रमाता है : [2] ﴿مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ﴾ और हम अपनी गुनहगारी पर इक़्रार करते हैं पस मग़्फ़िरत तेरी हमारी अम्साल के वासित़े है (हम जैसे लोगों के लिये ही है) इलाही ! हम को बख़्श दे और हम पर रह़्म कर और हम को पानी दे, फिर अपने हाथ उठाए और मींह बरसा ।[3]

किसी ने मालिक बिन दीनार से कहा : मींह के लिये दुआ़ कीजिये, फ़रमाया : "तुम मींह बरसने में देर समझते हो और मैं पथ्थर बरसने में", या'नी तुम समझते हो कि मींह बरसने में देर हो गई और मैं कहता हूं येह ख़ुदा की रह़मत है कि पथ्थर नहीं पड़ते ।[4]

**तीसरा सबब :** इस्तिग़्नाए मौला । वोह ह़ाकिम है मह़कूम नहीं,

---

1 "إحياء العلوم"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٧.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : : "नेकी वालों पर कोई राह नहीं ।" (پ١٠، التوبة: ٩١)

3 "إحياء العلوم"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٧

4 المرجع السابق.



www.dawateislami.net

ग़ालिब है मग़्लूब नहीं,मालिक है ताबेअ़ नहीं, अगर तेरी दुआ़ क़बूल न फ़रमाई तुझे नाख़ुशी और ग़ुस्से, शिकायत और शिक्वे की मजाल कब है, जब ख़ासों के साथ येह मुआ़-मला है कि जब चाहते हैं अ़ता करते हैं जब चाहते मन्अ़ फ़रमाते हैं तो तू किस शुमार में है कि अपनी मुराद पर इसरार करता है !(1) (2)﴿وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾

**قال الرضاء :** उस का इस्तिग़्ना ह़क़, उस का वा'दा ह़क़, उस की बात तमाम, उस की रह़मत आ़म, दुआ़ कि शराइत़ व आदाब की जामेअ़ हो, ह़ुसूले मस्ऊल ही के साथ क़बूल होना ज़रूर नहीं, दफ़्ए़ बला है, सवाबे उ़क़्बा है, जैसा कि आता है और ब ईं हमा उस पर कुछ वाजिब नहीं ।(3)

---

1 या'नी अल्लाह तआ़ला हर चीज़ से ग़नी है हर ख़ूबी व सिफ़त उसी के वासित़े है वोह जो चाहे करे किसी को मजाले उफ़ तक नहीं है उस का तो अपने नेक बन्दों के साथ येह मुआ़-मला है कि जब चाहता है उन को देता है और जब चाहता है उन को उस चीज़ की त़लब से मन्अ़ फ़रमा देता है तो अगर उस ने तेरी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाई तो तेरी क्या मजाल कि तू नाख़ुशी का इज़्हार करे या उस की बारगाह में शिक्वे शिकायत करते हुए बार बार उसी चीज़ के ह़ुसूल की दुआ़ मांगे !

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी नहीं जानते ।" (پ۱۲، یوسف: ۲۱)

3 वोह बे नियाज़ है, उस का वा'दा सच्चा है, उस की बात हो कर रहती है, उस की रह़मत सब को शामिल है चुनान्चे अगर दुआ़ में शराइत़ व आदाब का मुकम्मल ख़याल व लिह़ाज़ रख भी लिया जाए तो येह बात ज़रूरी नहीं कि जो चीज़ दुआ़ में मांगी जा रही है वोही चीज़ ह़ासिल भी हो जाए, हो सकता है कि उस पर कोई बला व मुसीबत आने वाली थी जो इस दुआ़ की वजह से टल गई हो, येह भी मुम्किन है कि इस दुआ़ के सबब उस के हाथ नेकियों का ऐसा बे बहा ख़ज़ाना आया हो जो आख़िरत में काम आए बहर ह़ाल अगर बयान कर्दा दोनों सूरतें न भी हों तो वोह रब عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़्लक़ है जो चाहे करे उस पर किसी का ज़ोर नहीं और न ही उस पर कुछ देना वाजिब व लाज़िम ।



www.dawateislami.net

﴿اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ﴾[2] ﴿يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ﴾[1] न उस के ग़िनाए मुत़्लक़ में कोई शक[3] ﴿اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ﴾ न उस के किसी वा'दे या वई़द में फ़र्क़ आना मुम्किन,[4] ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ﴾ ﴿مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ﴾[5] आह.....! आह.....! आह.....!

جگر خوں میشود زیں یاد مارا

زاستغنائے حق فریاد مارا[6]

لا ملجأ من اللّٰه إلا إليه وحسبنا اللّٰه ونعم الوكيل وصلّى اللّٰه تعالٰى على النبي الرحمة المُهْدَة أقرب وسيلة إلى اللّٰه وآله وصحبه بالتبجيل.[7]

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह जो चाहे करे।" (پ١٣، إبراهيم: ٢٧)

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है जो चाहे।" (پ٦، المائدة: ١)

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ है, सब ख़ूबियों सराहा।" (پ٢١، لقمان: ٢٦)

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता।" (پ١٣، الرعد: ٣١)

5 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मेरे यहां बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूं।" (پ٢٦، قٓ: ٢٩)

6 या'नी उस की याद से हमारा जिगर टुकड़े टुकड़े हो जाए तो भी हमें उसी बे नियाज़ से फ़रियाद है।

7 कोई पनाह नहीं सिवाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम को बस है और क्या ही अच्छा कारसाज़ ! और अल्लाह तआ़ला रह़मत व नरमी वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के तमाम आल व अस्ह़ाब पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए जो उस की त़रफ़ हमारे सब से क़रीबी वसीला हैं।



www.dawateislami.net

**चौथा सबब :** हिक्मते इलाही है कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ उस से त़लब करता है और वोह बराहे मेह्रबानी तेरी दुआ़ को इस सबब से कि तेरे ह़क़ में मुज़िर है, रद फ़रमाता है, म-सलन तू जोयाए सीमो ज़र है और इस में तेरे ईमान का ख़त़रा है या तू ख़्वाहाने तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत है और वोह इ़ल्मे ख़ुदा में मूजिबे नुक़्साने आ़क़िबत है, ऐसा रद, क़बूल से बेहतर ।[1] ﴿عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْـًٔا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ﴾ पर नज़र कर और इस रद का शुक्र बजा ला ।[2]

**पांचवां सबब :** कभी दुआ़ के बदले सवाबे आख़िरत देना मन्ज़ूर होता है, तू हुत़ामे दुन्या (दुन्यवी साज़ो सामान) त़लब करता है और परवर्द गार नफ़ाइसे आख़िरत (आख़िरत की उ़म्दा चीज़ें) तेरे लिये ज़ख़ीरा फ़रमाता है, येह जाए शुक्र है (शुक्र का मक़ाम है) न (कि) मक़ामे शिकायत ।

**قال الرضاء :**

**सबब 6 ता सबब 11 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "तीन शख़्स हैं कि तेरा रब उन की दुआ़ नहीं क़बूल करता :

**एक** वोह कि वीराने मकान में उतरे ।

**दूसरा** वोह मुसाफ़िर कि सरे राह मक़ाम करे या'नी सड़क से बच कर न ठहरे, बल्कि ख़ास रास्ते ही पर नुज़ूल करे (या'नी उतरे) ।

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो ।" (پ۲، البقرة: ۲۱٦)

2 बा'ज़ अवक़ात दुआ़ क़बूल न होने में हिक्मते ख़ुदा वन्दी येह होती है कि तू जो मांग रहा है वोह तेरे लिये नुक़्सान देह है म-सलन : तू मालो दौलत मांगता है लेकिन वोह तेरे ईमान के लिये ख़त़रनाक है, तू सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत का सुवाल करता है लेकिन इस में तेरी आख़िरत का नुक़्सान है, ऐसी दुआ़ का क़बूल न होना ही बेहतर है तो ऐसी दुआ़ के रद पर तुझे चाहिये कि शुक्रे ख़ुदा वन्दी बजा ला ।

**तीसरा** वोह जिस ने ख़ुद अपना जानवर छोड़ दिया, अब ख़ुदा से दुआ़ करता है कि उसे रोक दे।''

أخرجه الطبراني في "الكبير" عن عبد الرحمن بن عائذ رضي الله تعالٰى عنه بسند حسن.[1]

और फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''तीन शख़्स अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं और उन की दुआ़ क़बूल नहीं होती :

**एक** वोह जिस के निकाह़ में कोई बद ख़ुलुक़ (बद अख़्लाक़) औ़रत हो और वोह उसे त़लाक़ न दे।

**दूसरा** वोह जिस का किसी पर कुछ आता था और उस के गवाह न कर लिये।

**तीसरा** वोह जिस ने सफ़ीह बे अ़क़्ल को माल सिपुर्द कर दिया ह़ालां कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : सफ़ीहों (बे वुक़ूफ़ों) को अपने माल न दो।''

أخرجه الحاكم عن أبي موسى الأشعري رضي الله تعالٰى عنه بسند نظيف.[2]

---

1 इस ह़दीस को त़-बरानी ने ''मो'जमे कबीर'' में स-नदे ह़सन के साथ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़इद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया।

"مجمع الزوائد"، كتاب الحجّ، باب أدب السفر، الحديث: ٥٢٩٧، ج٣، ص٤٨٨ (بحوالہ طبرانی)

2 इस ह़दीस को ह़ाकिम ने ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से स-नदे नज़ीफ़ के साथ रिवायत किया।

"المستدرك"، تفسير سورة النساء، باب: ثلاثة يدعون الله فلا يستجاب لهم، الحديث: ٣٢٣٥، ج٣، ص٢٣.



www.dawateislami.net

तो येह छ6 हुए जिन की निस्बत तस्रीह़ फ़रमाई कि इन की दुआ़ क़बूल नहीं होती।

**أقول وباللّٰه التوفيق :** मगर ज़ाहिरन इस से मुराद येही कि उस ख़ास माद्दे में उन की दुआ़ न सुनी जाएगी न येह कि जो ऐसा करे मुत़्लक़न उस की कोई दुआ़ किसी अम्र में क़बूल न हो और इन उमूर में अ़-दमे क़बूल का सबब ज़ाहिर कि येह काम ख़ुद अपने हाथों के किये हैं।

वीराने मकान में उतरने वाला उस की मुज़र्रतों (नुक़्सानात) से आगाह है, फिर अगर वहां चोरी हो या कोई लूट ले या जिन्न ईज़ा पहुंचाएं तो येह बातें ख़ुद उस की क़बूल की हुई हैं, अब क्यूं उन के रफ़अ़ की दुआ़ करता है !

यूंही जब रास्ते पर क़ियाम किया तो हर क़िस्म के लोग गुज़रेंगे, अब अगर चोरी हो जाए, या हाथी घोड़े के पाउं से कुछ नुक़्सान, रात को सांप वग़ैरा से ईज़ा पहुंचे इस का अपना किया हुवा है। नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "शब को सरे राह न उतरो (या'नी रात को रास्ते में पड़ाव न डालो) कि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ से जिसे चाहे राह पर फैलने की इजाज़त देता है।"(1)

और जानवर को ख़ुद छोड़ कर उस के ह़ब्स (या'नी उस पर क़ाबू पाने) की दुआ़ तो ज़ाहिर ह़माक़त है क्या वाहिदे क़ह्हार को आज़माता या مَعَاذَاللّٰه उसे अपना मह़कूम ठहराता है !

---

1 "كنز العمال"، كتاب المواعظ والرقائق... إلخ، الحديث: ٤٣٧٩٧، الجزء السادس عشر، ج٨، ص١٤، (بحوالہ طبرانی).



www.dawateislami.net

सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से किसी ने कहा : अगर ख़ुदा की क़ुदरत पर भरोसा है अपने आप को उस पहाड़ से नीचे गिरा दो, फ़रमाया : "मैं अपने रब को आज़माता नहीं।"[1]

और औ़रत की निस्बत सहीह़ ह़दीस से साबित है कि टेढ़ी पसली से बनी है, इस की कजी हरगिज़ न जाएगी, सीधा करना चाहो तो टूट जाएगी और उस का टूटना येह है कि त़लाक़ दे दी जाए।[2] पस या तो आदमी उस की कजी पर सब्र करे या त़लाक़ दे दे कि न त़लाक़ देता न सब्र करता बल्कि बद दुआ़ देता है, क़ाबिले क़बूल नहीं।

यूंही जब गवाह न किये ख़ुद अपना माल मोह्लका (हलाकत) में डाला और सफ़ीह (बे वुक़ूफ़) को देना बरबादी के लिये पेश करना है। फिर दानिस्ता, मवाक़ेए़ मुज़र्रत (नुक़्सान देह जगहों) में पड़ कर ख़लास (छुटकारा) मांगना ह़माक़त है।

**ख़ुलासा** येह है : "خویشتن کردہ را علاجے نیست"[3] फ़क़ीर के ख़याल में ज़ाहिरन मा'निये अह़ादीस येह हैं, وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

फ़क़ीर ने इस तह़रीर के चन्द रोज़ बा'द "**अल अश्बाहु वन्नज़ाइर**" में देखा कि **फ़वाइदे शत्ता** में "**मुह़ीत़**" कि **किताबुल ह़ज्र** से येह पिछले तीन शख़्स नक़्ल किये कि इन की दुआ़ क़बूल नहीं होती।[4]

---

1 "فیض القدیر"، ج۳، ص۳۹۲، تحت الحدیث: ۳۴۴۵.

2 "صحیح مسلم"، کتاب الرضاع، باب الوصیة بالنساء، الحدیث:۱۴۶۸، ص۷۷۵.

3 ***नहीं इलाज ख़ुद कर्दा कारसाज़ी का***

4 "الأشباہ والنظائر"، الفن الثالث، فائدة: ثلاثة لا یستجاب دعاء ہم، ص۳۳۸.



www.dawateislami.net

अ़ल्लामा ह़मवी ने "**ग़म्ज़ुल उ़यूनि वल बसाइर**"[1] में "**अह़कामुल क़ुरआन**" इमाम अबू बक्र जस्सास से नक़्ल किया कि ज़ह़ाक ने अपने दैन[2] पर गवाह न करने वाले की निस्बत कहा :

إن ذهب حقّه لم يؤجر

وإن دعا عليه لم يجب؛ لأنّه ترک حقّ اللّٰه تعالٰی وأمره.[3]

या'नी : "अगर उस का ह़क़ मारा जाए तो कुछ अज्र न पाए और अगर मदयून पर बद दुआ़ करे तो क़बूल न हो कि इस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ छोड़ा और उस के अम्र का ख़िलाफ़ किया।"

या'नी : [4] ﴿وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَایَعْتُمْ﴾ : قوله تعالٰی येह ता'लील بِحَمْدِاللّٰہِ تَعَالٰی इस मा'ना की मुअय्यिद (या'नी : ताईद करती) है जो फ़क़ीर ने समझे, या'नी इन की दुआ़ मक़्बूल न होना ख़ास उसी माद्दे (बारे) में है।

**सबब 12, 13, 14 :** इसी "**ग़म्ज़ुल उ़यून**" में "**किताबुल मुह़ा-ज़रात**" अबू यह़्या ज़-करिय्या मरागी़ से नक़्ल किया : ह़ज़रते

---

1 أي: غمز عيون البصائر وهو مشهور بيننا

2 **दैन की ता'रीफ़ :** जो चीज़ वाजिब फ़िज़्ज़िम्मा हो किसी अ़क़्द म-सलन बैअ़ या इजारा की वजह से या किसी चीज़ के हलाक करने से उस के ज़िम्मे तावान वाजिब हुवा या क़र्ज़ की वजह से वाजिब हुवा इन सब को दैन कहते हैं दैन की एक ख़ास सूरत का नाम क़र्ज़ है जिस को लोग दस्त गर्दां कहते हैं, हर दैन को आज कल लोग क़र्ज़ बोला करते हैं येह फ़िक़्ह की इस्त़िलाह़ के ख़िलाफ़ है।

("बहारे शरीअ़त", ह़िस्सए याज़्दहुम, मुबैअ़ और समन में तसर्रुफ़ का बयान, जि. 2, स. 752)

3 "غمز عيون البصائر"، الفن الثالث، فائدة: ثلاثة لا يستجاب دعاء هم، ج٣، ص٢٥٣.

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह कर लो।" (پ٣، البقرة: ٢٨٢)



www.dawateislami.net

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला छ शख़्सों की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता । तीन तो येही पिछले ज़िक्र फ़रमाए,

और **एक** वोह जो अपने घर में मुंह फैलाए बैठा रहे कि ऐ रब मेरे ! मुझे रोज़ी दे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : क्या मैं ने तुझे रिज़्क़ ढूंडने का हुक्म न दिया ? तूने मेरा इर्शाद न सुना : ﴿فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰہِ﴾ "फैल जाओ ज़मीन में और ढूंडो फ़ज़्ल अल्लाह का ।" (پ ٢٨، الجمعة: ١٠)

**दूसरा** वोह जिस ने अपना माल फ़ुज़ूल ख़र्चियों में खो दिया, अब कहता है : ऐ रब ! मुझे और दे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : क्या मैं ने तुझे मियाना रवी का हुक्म न दिया था ? क्या तूने मेरा इर्शाद न सुना था ? ﴿وَالَّذِیْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ یُسْرِفُوْا وَلَمْ یَقْتُرُوْا وَكَانَ بَیْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا﴾[1]

**तीसरा** वोह कि ऐसे लोगों में मुक़ीम रहे जो उसे ईज़ा देते हैं और दुआ़ करे : ऐ रब मेरे ! मुझे इन के शर से किफ़ायत कर, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : क्या मैं ने तुझे हिजरत का हुक्म न दिया ? क्या मेरा इर्शाद न सुना : ﴿اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰہِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِیْهَا[2]﴾[3]۔

येह तक़रीर भी بِحَمْدِاللّٰہِ इस मा'निये फ़क़ीर की मुअय्यिद है ।

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों के बीच ए'तिदाल पर रहें ।" (پ١٩، الفرقان: ٦٧)

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते ।" (پ٥، النسآء: ٩٧)

3 "غمز عیون البصائر"، الفن الثالث، فائدة: ثلاثة لا یستجاب دعاء هم، ج٣، ص٢٥٣



www.dawateislami.net

**أقول :** इस तक़्दीर पर और बहुत लोग ऐसे निकल सकते हैं जो ख़ुद कर्दा का इ़लाज ढूंडते हों म-सलन : जो बिग़ैर[1] किसी सख़्त मजबूरी के रात को ऐसे वक़्त घर से बाहर निकले कि लोग सो गए हों पाउं की पहचल (पाउं की आहट/आवाज़) रास्तों से मौक़ूफ़ हो गई हो। सहीह़ ह़दीस में इस से मुमा-न-अ़त फ़रमाई कि इस वक़्त बलाएं मुन्तशिर होती हैं।(1)

या रात[2] को दरवाज़ा खुला छोड़ दे या बिग़ैर[3] **बिस्मिल्लाह** कहे बन्द करे कि शैत़ान उसे खोल सकता है और जब **बिस्मिल्लाह** कह कर दहना पाउं मकान में रखे तो शैत़ान कि साथ आया था बाहर रह जाता है और जब **बिस्मिल्लाह** कह कर दरवाज़ा बन्द करे तो उस के खोलने पर क़ुदरत नहीं पाता।

या खाने[4], पानी के बरतन **बिस्मिल्लाह** कह कर न ढांके कि बलाएं उतरती और ख़राब कर देती हैं, फिर वोह त़आ़म व शराब (खाना व पानी) बीमारियां लाते हैं।(2)

या बच्चे[5] को मग़रिब के वक़्त घर से बाहर निकाले कि इस वक़्त शयात़ीन मुन्तशिर होते हैं।(3)

---

1 "المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ١٣٤٥، ج١، ص٣٦٩.

و"مسند أبي يعلى"، الحديث: ٢٣٢٣، ج٢، ص٣٦٦.

2 "صحيح البخاري" كتاب الأشربة، باب تغطية الإناء، الحديث: ٥٦٢٣، ج٣، ص٥٩١.

و"صحيح مسلم"، كتاب الأشربة، باب الأمر بتغطية الإناء... إلخ، الحديث: ٢٠١٢، ص١١١٤.

3 "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ١١٠٩٤، ج١١، ص٦٣.



www.dawateislami.net

या खाने[6] से बे हाथ धोए सो रहे कि शैतान चाटता और مَعَاذَاللّٰه बरस(1) का बाइस होता है(2)

या ग़ुस्ल[7] ख़ाने में पेशाब करे कि इस से वस्वसा पैदा होता है।(3)

या छज्जे[8] के क़रीब सोए और छत पर रोक (बाउन्ड्री) न हो कि गिर पड़ने का एहतिमाल है।(4)

---

1 **बरस :** एक मरज़ का नाम। जिस में फ़सादे ख़ून से जिस्म पर सफ़ेद धब्बे पड़ जाते हैं। ("उर्दू लुग़त", जि. 2, स. 1020)

2 "المستدرك"، كتاب الأطعمة، باب لا يمسح أحدكم يده...إلخ، الحديث: ٧٢٠٩، ج٥، ص١٦٢.

و"سنن الترمذي"، كتاب الأطعمة، باب ما جاء في كراهية البيتوتة... إلخ، الحديث: ١٨٦٦، ج٣،ص٣٤٠.

و"المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٥٤٣٥، ج٦، ص٣٥.

و"المرقاة"، ج٨، ص٥٠.

3 "سنن ابن ماجه"، كتاب الطهارة، باب كراهة البول في المغتسل، الحديث: ٣٠٤، ج١، ص١٩٤.

و"سنن النسائي"، كتاب الطهارة، باب كراهة البول في المستحم، الحديث:٣٦، ص١٤.

4 "سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في النوم على سطح غير محجر، الحديث:٥٠٤١، ج٤، ص٤٠٣.

و"المرقاة"، تحت الحديث: ٤٧٢٠، ج٨، ص٤٨٧-٤٨٨.



www.dawateislami.net

या औ़रत[9] से हम बिस्तरी के वक़्त **बिस्मिल्लाह** न कहे कि शैत़ान शरीक हो जाता और अपना उ़ज़्व उस के उ़ज़्व के साथ दाख़िल करता है(1) जिस के बाइ़स बच्चा इन्सान व शैत़ान दोनों के नुत़्फ़े से बनता और फिर बुरा तुख़्म (ख़राब बीज) बुरा ही फल लाता है(2)

या खाना[10] बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** के खाए(3) कि शैत़ान साथ खाता और जो त़आ़म चन्द मुसल्मानों को बस करता (काफ़ी होता) एक ही के खाने में फ़ना (ख़त्म) हो जाता है।(4)

या ज़मीन[11] के सूराख़ों में पेशाब करे कि कभी सांप वग़ैरा जानवरों का घर या जिन्न का मकान होता और इन्सान ईज़ा पाता है(5)

---

1 "فتح الباري"، تحت الحديث: ٥١٦٥، كتاب النكاح، ج٩، ص١٩٦

2 हम बिस्तरी के वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने से मुराद येह है कि सित्र खोलने से पहले ही पढ़ ले कि खुले सित्र पढ़ना जाइज़ नहीं, येही एह़तियात़ इस्तिन्जा ख़ाना जाते वक़्त भी मल्ह़ूज़ रखें कि इस्तिन्जा ख़ाने से बाहर ही बिस्मिल्लाह शरीफ़ और दुआ़ पढ़ ली जाए।

3 ह़दीसे पाक में वारिद कि खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना अगर भूल जाए और दरमियान में याद आए तो यूं कहे : ((بِسْمِ اللّٰهِ أَوَّلَهٗ وَآخِرَهٗ)) "अल्लाह के नाम से खाने की इब्तिदा और इन्तिहा।"

"سنن أبي داود"، كتاب الأطعمة، باب التسمية على الطعام، الحديث: ٣٧٦٧، ج٣، ص٤٨٧

**नोट :** यहां जहां कहीं भी बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने का ज़िक्र है इस से पूरी "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" मुराद है।

4 "سنن أبي داود"، كتاب الأطعمة، باب التسمية على الطعام، الحديث:٣٧٦٦، ج٣، ص٤٨٧.

5 "سنن النسائى"، كتاب الطهارة، باب كراهية البول فى الجحر، الحديث:٣٤، ص١٤.
و"مشكاة المصابيح"، كتاب الطهارة، الحديث: ٣٥٤، ج١، ص٨٤.
و"المرقاة"، تحت الحديث: ٣٥٤، ج٢، ص٧٢.


www.dawateislami.net

या अपनी[12] ख़्वाह अपने दोस्त की कोई चीज़ पसन्द आए तो उस पर दफ़्ए नज़र की दुआ :

"اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلَیْہِ وَلَا تَضُرَّہٗ مَا شَآءَ اللّٰہُ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ"[1] न पढ़े कि नज़र हक़ है[2] मर्द को क़ब्र और ऊंट को देग में दाख़िल कर देती है,[3]

या तन्हा[13] सफ़र करे कि फ़ुस्साक़ इन्सो जिन्न से मुज़र्रत (तक्लीफ़) पहुंचती है और हर काम में दिक़्क़त पड़ती है।

या हंगामे जिमाअ़[14] (हम बिस्तरी के वक़्त) शर्मगाहे ज़न (औ़रत की शर्मगाह) की त़रफ़ निगाह करे कि مَعَاذَاللّٰہ ! अपने या बच्चे या दिल के अन्धे होने का बाइ़स है।[4]

या उस वक़्त[15] बातें करे कि बच्चे के गूंगे होने का एह़तिमाल है।[5]

---

1 ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर ब-र-कत नाज़िल फ़रमा, और इसे ज़रर न पहुंचे जो कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा सो वोही तो हुवा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ताईद के बिग़ैर नेकी पर कुछ क़ुदरत नहीं।

"مجمع الزوائد"، كتاب الطب، باب ما يقول إذا رأى ما يعجبه، الحديث: ٨٤٣٢، ج٥، ص١٨٧.

و"عمل اليوم والليلة"، الحديث: ٢٠٧-٢٠٨، ص٧٢، بألفاظ متقاربة.

2 "صحيح البخاري"، كتاب الطب، باب: العين حق، الحديث: ٥٧٤٠، ج٤، ص٣٢.

3 "حلية الأولياء"، الحديث: ٩٧٨٠، ج٧، ص٩٦.

4 "فيض القدير"، الحديث: ٥٥٢-٥٥١، ج١، ص٤١٩.

و"الكامل في ضعفاء الرجال"، ج٢، ص٢٦٥.

5 "كنز العمال"، كتاب النكاح، الحديث: ٤٤٨٩٣، الجزء السادس عشر، ج٨، ص١٥١.

و"التيسير" شرح "الجامع الصغير"، ج١، ص١٧٦.



www.dawateislami.net

या खड़े खड़े[16] पानी पिया करे(1) कि दर्दे जिगर का मूरिस (बाइस) है

या पाख़ाने[17] में बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** कहे जाए कि ख़बाइस से मुज़र्रत (या'नी ख़बीस जिन्नात वग़ैरा से नुक़्सान पहुंचने) का अन्देशा है(2)

या फ़ासिक़ों[18], फ़ाजिरों, बद वज़्ओं, बद मज़्हबों के पास निशस्त बरख़ास्त करे कि अगर बिलफ़र्ज़ सोहबते बद के असर से बचा तो **मुत्तहम** ज़रूर हो जाएगा।

या लोगों[19] के रास्तों में ख़्वाह उन की निशस्त बरख़ास्त की जगह पाख़ाना पेशाब करे(3) कि आप ही गालियां खाएगा।

या सफ़र[20] से पलट कर बिग़ैर इत्तिलाअ़ किये रात को अपने घर

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب الأشربة، باب في الشرب قائماً، الحديث: ٢٠٢٤-٢٠٢٦، ص١١١٩.

2 "المصنف" لابن أبي شيبة، كتاب الطهارات، باب ما يقول الرجل إذا دخل الخلاء، الحديث: ٥، ج١، ص١١.

3 "سنن ابن ماجه" كتاب الطهارة، باب النهي عن الخلء على قارعة الطريق، الحديث: ٣٢٨، ج١، ص٢٠٨.

و"المستدرك"، كتاب الطهارة، الحديث: ٦١١، ج١، ص٣٩٦.

و"المسند" لأحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن العباس... إلخ، الحديث: ٢٧١٥، ج١، ص٦٤٠.

4 "صحيح البخاري"، كتاب النكاح، الحديث: ٥٢٤٦، باب طلب الولد، ج٣، ص٤٧٦.

و"صحيح مسلم"، كتاب الإمارة، باب كراهة الطروق... إلخ، الحديث: ٧١٥، ص١٠٦٤.



www.dawateislami.net

में चला आए[4] कि मक्रूह देखने का एह़तिमाल है।[1]

येह सब उमूर ह़दीसों में मासूर (वारिद) और इसी क़िस्म के और सदहा आदाब अह़ादीस में मज़्कूर और कुतुबे आइम्मा व उ़-लमा में मस्तूर (अइम्मए दीन व उ़-लमा की किताबों में मज़्कूर हैं) जिन की शर्ह़ के लिये मुजल्लदात (या'नी कई जिल्दें) भी काफ़ी नहीं।

बर बिनाए तक़्रीरे मज़्कूर इन सब सूरतों में कह सकते हैं कि इन ख़ास माद्दों में इन लोगों की दुआ़ क़बूल न होगी कि इन्हों ने ख़ुद ख़िलाफ़े हुक्मे शर-अ़ कर के मवाक़ेए़ मुज़र्रत में क़दम रखा और ख़ादिमे ह़दीस जानता है कि अक्सर ह़दीस में बा'ज़ बातों का तज़्किरा और उन के ज़िक्र से उन के हज़ार अम्साल की त़रफ़ इशारा फ़रमाते हैं। هذا ما عندي والله تعالٰى أعلم (जो कुछ बयान हुवा येह मेरे नज़्दीक है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बेहतर जानने वाला है।)

**सबब 15 :** أَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ न करना (या'नी नेकी का हुक्म न करना और बुराई से न रोकना)।

या'नी किसी जमाअ़त में कुछ लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करते हों दूसरे ख़ामोश रहें और ह़त्तल मक़्दूर उन्हें बाज़ न रखें मन्अ़ न करें कि हर एक के आ'माल उस के साथ हैं हमें रोकने, मन्अ़ करने से क्या ग़रज़, तो जो बला आएगी उस में नेकों की दुआ़ भी न सुनी जाएगी कि येह ख़ुद नह्य व अम्र छोड़ कर तारिके फ़राइज़ थे।

---

1 या'नी हो सकता है कि उस के घर वाले ऐसी ह़ालत में हों कि उसे ना पसन्द है और उन्हें ऐसी ह़ालत में देख कर उसे दुख व तक्लीफ़ पहुंचे।

**नोट :** आदाबे सफ़र जानने के लिये "बहारे शरीअ़त", सोलहवां ह़िस्सा, सफ़ह़ा 291 मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।



www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "या तो तुम أَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ करोगे या अल्लाह तआ़ला तुम पर तुम्हारे बदों को मुसल्लत़ कर देगा, फिर तुम्हारे नेक दुआ़ करेंगे तो क़बूल न होगी।"

أخرجه البزار والطبراني في "الأوسط" عن أبي هريرة رضي الله تعالٰى عنه بسند حسن.[1]

**तम्बीह :**

**أقول :** किसी सूरत में दुआ़ क़बूल न होना यक़ीनी क़त़्ई नहीं, न इस से येह मुराद कि ऐसी ह़ालतों में दुआ़ को मह़्ज़ फ़ुज़ूल व ना मक़्बूल जान कर बाज़ रहें, ह़ाशा ! (हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि) दुआ़ सलाहे़ अहले ईमान है (या'नी दुआ़ ईमान वालों का हथियार है), दुआ़ जालिबे अम्नो अमान है (या'नी दुआ़ अम्नो अमान लाने वाली है), दुआ़ नूरे ज़मीन व आस्मान है, दुआ़ बाइ़से रिज़ाए रह़मान है, बल्कि मक़्सूद इन उमूर से रोकना है कि येह दुआ़ व इजाबत में ह़िजाब और असर के लिये सद्दे बाब होते हैं, तो इन से बचना लाज़िम और जिस से वाक़ेअ़ हो लिये अगर हनूज़ (अभी तक) मौजूद हैं तो उन का इज़ाला ज़रूर, जैसे : माले ह़राम कि जिस से लिया है वापस दे वोह न रहा उस के वारिस को दे या उन से मुआ़फ़ कराए, कोई न मिले तो स-दक़ा कर दे और जो गुज़र चुके तौबा व इस्तिग़्फ़ार और आयन्दा के लिये तर्के इसरार का अ़ज़्मे सह़ीह़ करे, इस की ब-र-कत उन की नुहूसत को ज़ाइल कर देगी और दुआ़ بِاِذْنِهٖ تَعَالٰى अपना असर देगी। ﴿وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق﴾

---

1 इस ह़दीस को बज़्ज़ार ने और त़-बरानी ने "अल मो'जमुल औसत़" में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से स-नदे ह़सन के साथ रिवायत किया।

"المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ١٣٧٩، ج١، ص٣٧٧



www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## दराज़िये उ़म्र का नुस्ख़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जिस शख़्स को येह अच्छा लगे कि उस की रोज़ी में फ़राख़ी और उस की उ़म्र में दराज़ी हो तो उस को चाहिये कि अपने रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करे ।

(مشکاۃ المصابیح، ۲/۲۰۵،
حدیث: ۴۹۱۸)

01082102


Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Triconia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net